2015 - 2016

पहल

एक कदम बदलाव की ओर...

सहयोग RBS | RDTT

उन्नत पद्धति से खेती करने की सफल गाथा

dsc
Development
Support
Centre

परिचयः

मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव की यह बात है, नाम है गिरवान्या (पटेलपुरा) जो धार जिले के कुक्षी तहसील में स्थित है। यह एक आदिवासी बाहुल्य गांव है। यहां के किसान परंपरागत परंपरागत खेती पर निर्भर हैं जब की कुछ लोगों की मुख्य कमाई मज़दूरी से होती है।

किसानों के हालातः

जोबट परियोजना क्षेत्र में किसान खरीफ सीजन में लगभग ७० प्रतिशत रकबे में परंपरागत तरीके से कपास की खेती करते हैं परंतु पिछले कुछ वर्षों से बी.टी. कपास में रस चूसक कीटों का प्रकोप बढ़ गया है। इन कीटों के लिए रासायनिक कीटनाशक का प्रयोग करना पड़ता है।

आदिवासी किसानों को कीट व रोगों की सही पहचान न होने के कारण फसल का सही उपचार नहीं हो पाता ख जानकारी में कमी के कारण मनमाने कीट नाशकों के प्रयोग से खेती के खर्च में बढ़ोत्तरी होती है। अंधाधुंध रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग से खेती का खर्चा तो बढ़ता ही है, जमीन के उपजाउपन में कमी से फसल के उत्पादन में भी कमी आती है और इसके परिणाम स्वरूप खेती के कुल खर्च को निकालने के बाद किसान के हाथ बहुत ही कम मुनाफा बचता है।

कुक्षी तहसील के ज्यादातर किसान बरसों से परंपरागत तरीकों से अपनी फसल ले रहे हैं । पिछड़ा इलाका होने की वजह से यहां के ज्यादातर किसानों को खेती की नई तकनीकों एवं फसलों के बारे में जानकारी नहीं है। फसल पर लगने वाले नए किस्म के रोग और कीटों के बारे में ध्यान रखने योग्य नई जानकारी के आभाव से उनका खेती का खर्च काफी बढ़ गया है।

बदलाव की पहलः

किसानो की इन्हीं समस्याओं का हल निकालने हेतु डीएससी यानि की डेवलपमेंट सपोर्ट सेंटर की एक शाखा कुक्षी तहसील में भी शुरू की गई ख वर्ष १९९४ से गुजरात में सक्रीय रूप से किसानों के बीच में कार्यरत डीएससी संस्थान किसानों की समस्या का समाधान करने और खेती को चिर स्थायी या शाश्वत बनाकर खेती से अधिक मुनाफा लेने के रास्ते दिखाने के लिए कटिबद्ध है। डीएससी ने नयी तकनीक से कैसे खेती की जाती है, और उत्पादन को कैसे बढ़ाया जा सकता है, उसके बारे में किसानों को अनेक प्रकार की जानकारियां दी हैं।

संस्था के कृषि विशेषज्ञों द्वारा परियोजना क्षेत्र के जलवायु व अन्य कृषि परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद उन्होंने किसानो को अपने खेत में बी.टी कपास के स्थान पर नॉन बी.टी यानी की संकर कपास की फसल लगाने की सलाह दी ख उन्होंने किसानों को खेती के अन्य तरीकों जैसे खेत की तैयारी, बुवाई के सही तरीके, रासायनिक खाद के संतुलित उपयोग हेतु मिट्टी की जांच कराने व उसके अनुसार ही खाद के उपयोग, सही समय पर सिंचाई आदि की सलाह भी दी।

बिलकुल नई तकनीक और प्रजाति का बीज होने की वजह से यहां के किसानो को शुरू में डीएससी द्वारा दी गई सलाह पर भरोसा नहीं आया, परंतु किसानो के विकास के प्रति कटिबद्ध डीएससी संस्था ने उन्हें खेती की उन्नत पद्धतियों की जानकारी हेतु देश के अन्य इलाको का प्रेरणा प्रवास करवाया ख समय -समय पर किसान कार्यशालाओं का आयोजन किया गया इसमें वैज्ञानिकों के द्वारा उनको खेती करने के सही तरीकों की जानकारी दी गई एवं दूसरे सफल क्षेत्र के किसानों के द्वारा उनके अनुभव साझा किये गए।

एक कदम बदलाव की ओर

बी.टी कपास की खेती करनेवाले किसान विजय मुकामसिंह अपने खेत में परंपरागत तरीके से खेती करते थे लेकिन कहीं न कहीं उनके मन में आता था कि महंगाई दिन पर दिन बढ़ती जा रही है और खेती से आमदनी कम होती जा रही है ख ऐसे में खेती से गुज़ारा करना मुश्किल हो रहा है तो मैं ऐसा क्या करूं जिससे मेरा उत्पादन बढ़े, खर्च में कमी आए और मुनाफा भी अधिक मिले।

फ्हीएससी द्वारा करवाए गए प्रेरणा प्रवास और कृषि विशेषज्ञों द्वारा दी गई जानकारी के बाद गिरवान्या (पटेलपुरा) गांव के किसान विजयभाई प्रदर्शनी हेतु अपनी एक बीघा ज़मीन में नॉन बी.टी. कपास की फसल लगाने को राज़ी हुए.

क्रमांक	कार्य का विवरण	नान बी.टी. कपास की कुल लागत	बी.टी. कपास की कुल लागत
१	जुताई	५००	७००
२	गोबर खाद वर्मी कम्पोस्ट	७५०	१०००
३	मिट्टी जांच	२०	०
४	बीज खरीदी	८००	९३०
५	बीज उपचार	५०	०
६	बुआई	२००	२००
७	उर्वरक	७००	१८५०
८	कीटनाशक	२५०	२७००
९	खरपतवार	२००	२५०
१०	सुक्ष्म पोषक तत्व	४००	०
११	सिंचाई पर खर्च	३००	४००
१२	चुनाई कटाई मडाई थ्रेसिंग	३०००	२०००
१३	अन्य	२००	३००
१४	**कुल लागत**	**७३७०**	**१०३३०**
	कुल उत्पादन	**४ क्विंटल**	**६ क्विंटल**
	कुल मुनाफा	**₹१९६३०**	**₹८२२०**

बदलाव

परंपरागत तरीके से कपास की फसल लेने पर विजयभाई को प्रति बीघा लगभग रु. ८000 का ही मुनाफा होता था ख जब डीएससी की सलाह से किसान विजयभाई ने अपने १ बीघा प्लाट में उनकी बताई तकनीक और तरीके से नॉन बी.टी कपास लगाया तो उनका खेती में खर्च भी कम हुआ, उत्पादन भी अधिक मिला और फसल की गुणवत्ता भी अच्छी मिली । अच्छी गुणवत्ता के फसल के बाज़ार में दाम भी अच्छे मिले और सारे खर्च निकालने के बाद भी उनका मुनाफा लगभग रु. २0,000 था ।

किसान का अनुभव

गांव गिरवानिया के किसान विजय टैगोर का कहना है की इस कपास में कीटनाशक डालना ही नहीं पड़ा, जिससे काफी खर्च कम हो गया। जंहा बी.टी कपास में दवाई के पांच से छह स्प्रे करने पड़ते है, यहां एक स्प्रे में ही संकर कपास की फसल तैयार हो गयी एवं इसमें डेंडू भी अधिक लगते हैं। सही समय पर और सही मात्रा में खाद व सिंचाई देने से उत्पादन तो बढ़ा ही, कपास के रेशों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ा और फसल का दाम भी बढ़िया मिला.

नॉन बी.टी या देशी कपास की विशेषताएः

- देसी कपास में रसचूसक कीटों जैसे सफैद-हरे मच्छर, माहो, थ्रिप्स आदि कीटों के लिए कीटनाशक दवाई का उपयोग नहीं करना पड़ता।
- देसी कपास की गुणवत्ता अच्छी होने से बाज़ार में इसका ५00 से ७00 रुपियो तक अधिक मूल्य प्राप्त होता है।
- डेंडु में बीजों की संख्या अधिक होती है जिससे वज़न अधिक प्राप्त होता है।
- देसी कपास में फूल नीचे की ओर झुकता है, जिससे बारीश के कारण इसका पराग घुलता नहीं है और वह डेंडु में परिवर्तित होता है।
- इसका तना मुलायम एवं नर्म होता है जिसके कारण तेज़ हवा या आंधी में तना टूटता नहीं।

चुनौतियाः

- क्षेत्र में अधिकतर सीमांत किसान हैं , और वे नयी फसल लगाने से डरते हैं।
- पडोसी किसानों द्वारी नयी फसल लगाने वाले को हतोत्साहित किया जाना।
- प्रतिकूल मौसम।
- पिछले कुछ वर्षों से फसल के स्थिर बाज़ार भाव के कारण किसानों में उदासीनता।
- बिचौलियों की अधिकता इत्यादि।
- देशी कपास में देंडू उल्टा लगता है, जिससे अधिक बारिश में फसल खराब हो जाती है।
- देंडू का आकार छोटा होने के कारण चुनाई में मजदूरों को थोड़ी समस्या होती है ।

ध्यान रखने योग्य बातेः

- देसी कपास व बी.टी. कपास के उत्पादन को अलग अलग रखें।
- कपास की चुनाई ओस समाप्त होने के बाद शुरु करें।
- कपास का डेंडु या घेटा पुरा खुलने पर ही चुनाई करें जिससे उसमें बननेवाले रेशे का पूर्ण विकास हो सके।
- चुनाई जिस कपडे या पल्ली में करें वह पूरी तरह साफ होना चाहिए। जहां तक हो सके सूती कपड़े का उपयोग करें।

उपसंहारः

आधुनिक खेती का मतलब खेती में मशीन के अधिक उपयोग से ही नहीं है बल्कि खेती के दौरान किये जाने वाले विभिन्न कार्यों में सुधार से भी है। उदहारण के लिये खेती में मिट्टी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। मिट्टी परिक्षण कराने से जमीन के स्वास्थ्य व उसमे पोषक पदार्थों के आवश्यकता के बारे में पता चलता है और अगर परिक्षण के अनुसार पोषक तत्वों का प्रबंधन करें तो उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव होगा। इसी तरह समय- समय पर अनुशंसित बीजों के उपयोग से रोगों व कीटों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखने वाली वाली किस्मों के चुनाव से खेती में होने वाले खर्च को कम किया जा सकता है. नियंत्रित खर्चो वाली खेती से अधिक से अधिक उत्पादन मिल सके उस दिशा में हमेशा प्रयत्न करते रहना चाहिए। किसान विजयभाई ने जिस तरह संकर या देशी कपास की फसल से अपनी आय में बढ़ोत्तरी पायी वैसे ही कुक्षी तहसील के अन्य किसान भी अपनी खेती को एक नए मुकाम पर ले जा सकते हैं।

प्रतिवेदक : श्री मोहित पाटीदार • **सहयोग** : श्री कमलेश रजत • **मार्गदर्शक** : श्री मोहन शर्मा

dsc
Development
Support
Centre

डीएससी का परिचय

डीएससी वर्ष १९९४ से प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन जैसे कि जल, जमीन और कृषि विकास से आजिविका वृद्धि हेतु ज्ञान आधारित सहयोग प्रदान करने का कार्य कर रही है ख इसके तहत राज्य व केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों तथा अन्य संस्थाओं के साथ जुड़कर नीति निर्धारण, क्षमतावर्धन, अनुसंधान, मूल्यांकन, नेटवर्किंग आदि माध्यम से कृषि में उपयुक्त एवं स्थायी विकास करने हेतु संस्था निरंतर प्रयत्नशील है। डीएससी संस्था गुजरात में मेहसाना, साबरकांठा, आणंद, अमरेली, राजकोट आदि जिलों में तथा मध्यप्रदेश के धार, अलीराजपुर, इन्दौर एवं देवास जिलों में ३00 से अधिक गांवों के लगभग एक लाख किसान परिवारों को वॉटरशेड, सहभागी सिंचाई प्रबंधन तथा कृषि व उद्यमिता विकास आदि कार्यक्रमो के ज़रिए सहयोग कर रही है। रतन दोराब जी टाटा ट्रस्ट, मुंबई; रॉयल बैंक ऑफ स्कॉटलैंड फाउंडेशन, भारत; व आई डी एच के वित्तीय सहयोग से संस्था परियोजना क्षेत्र में कृषि को चिरस्थायी बनाने व कृषि से आजिविका में वृद्धि करने हेतु कृत संकल्पित है.

संपर्कः

यदि आपको इस प्रकार की खेती के लिए अधिक जानकारी अथवा मार्गदर्शन चाहिए तो कृपया नीचे दिए पते पर संपर्क करें

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, कुक्षी

मोबाईल नंबरः ०९४०७१२३९१३

कान्तिकुमार जैन के मकान में, होण्डा शो-रूम के सामने, अलिराजपुर रोड, कुक्षी, जिला धार, (म.प्र.)

डेवलपमेन्ट सपोर्ट सेन्टर, मनावर

मोबाईल नंबरः ०९४०७१३९३४३, मांगलिक भवन के पास, मेला मैदान रोड, मनावर- ४५४४४६, जिला- धार

Concept & Design by : www.madhyam.org